भरतपुर-राज.। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर राज. सरकार, भरतपुर प्रशासन एवं आयुर्वेद विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में राजयोग का अभ्यास कराने के पश्चात् ब्र.कु. बबिता को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित करते हुए सांस्कृतिक एवं पर्यटन राज्यमंत्री कृष्णेन्द्र कौर दीपा, सांसद बहादुर सिंह कोली, जिलाधीश संदेश नायक, अति. जिला कलेक्टर ओ.पी. जैन तथा अन्य गणमान्य लोग।

पठानकोट-पंजाब। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नगर निगम के मेयर अनिल वासुदेवा को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सत्या। साथ हैं ब्र.कु. गीता तथा ब्र.कु. प्रताप।

चुनार-उ.प्र.। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कुसुम। साथ हैं विधायक अनुराग सिंह पटेल, योगाचार्य राम ध्यान जी, इंजीनियर राज बहादुर सिंह, एस.डी.एम. अविनाश चन्द्र त्रिपाठी तथा अन्य।

सांतपुर-आबू रोड(राज.)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आदर्श राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,सांतपुर में कार्यक्रम के पश्चात् प्रधानाचार्य मोतीलाल गोयल को योग दिवस की बुकलेट भेंट करते हुए ब्र.कु. दिलीप राजकुले एवं ब्र.कु. राकेश,शांतिवन। साथ हैं पी.टी.आई. टीचर वंदना अवस्थी व अन्य।

रामपुर-उ.प्र.। 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम के दौरान परमात्म स्मृति में संदीप अग्रवाल,राष्ट्रीय अध्यक्ष,व्यापार मण्डल प्रतिनिधि, वेद प्रकाश गोयल,जिला अध्यक्ष,व्यापार मंडल, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. पार्वती, ब्र.कु. चन्द्रावती तथा अन्य।

दिल्ली-लॉरेन्स रोड। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर राजपथ,इंडिया गेट पर योगासन करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लक्ष्मी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

अपनी स्थिति के ज़िम्मेवार हम स्वयं

- गतांक से आगे...

मुफ्त का खाने वाला आलसी बनता जाता है। आलसी दिमाग शैतान का घर बनता है। इसीलिए क्यों नहीं उसको किन्हीं कार्यों में व्यस्त किया जाए। व्यस्त करने से उसका मन कम-से-कम शैतान का घर तो नहीं बनेगा। इस प्रकार उनको जीवन में अच्छे मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे दी जाए। इससे बड़ा पुण्य और कोई हो नहीं सकता है। तो ये पुण्य करो। अगर ये करने का टाइम नहीं है तो दान नहीं करना ठीक है। नहीं तो आज कितनों के साथ हमारी भागीदारी हो जाती है। उस भागीदारी में कर्म के फल की भोगना का समय आता है तो भोगना भी भागीदारी में ही चुक्तू करना पड़ता है।

-ब्र.कु.ऊषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जब चुक्तू करने का समय आता है तो भी ऐसे ही आता है। मान लो कि हम कहीं ट्रेन में जा रहे हैं। वहाँ किसी के बाजू में सीट खाली है और जाकर बैठ गए। अचानक उसकी बहस किसी तीसरे व्यक्ति से छिड़ जाती है। झगड़ा करने जैसी स्थिति हो जाती है। हाथा-पाई होने लगती है। हम बड़ी अच्छी भावना के साथ जाते हैं कि भाई, झगड़ा क्यों कर रहे हो? शांति रखो न, शांति से बैठो न। वो जो गुस्से का स्वरूप होता है उसमें वो तो लड़ते ही हैं, लेकिन उसके साथ-साथ हमें भी पीट देते हैं। हम सोचते हैं कि हम तो भलाई करने गये थे, लोगों ने हमें ही पीट दिया। अब ये मार क्यों खानी पड़ी? क्योंकि भागीदारी में जो अकाउंट बना और चुक्तू करने का समय आया, तो ये भी तो भागीदारी ही है। उसको जानते भी नहीं, पहचानते भी नहीं। जब भिखारी को दिया तो उसको जानते-पहचानते थोड़े ही थे। लेकिन भगीदारी में जो अकाउंट बना तो चुक्तू करने के समय भी भागीदारी में ही चुक्तू करना पड़ता है।

उस वक्त कई बार कई लोग सोचते हैं कि हम तो निर्दोष हैं, हम इसमें कैसे आ गए? हमें क्यों मारा गया? निर्दोष कोई नहीं है। कहीं न कहीं वो अकाउंट बना हुआ है। इसलिए जब चुक्तू करने का समय आया तो वो चुकाना तो पड़ेगा ही। तो निर्दोष कैसे कहेंगे?

मुझे याद आता है कि एक बार हम मुम्बई गए थे। हमारा एक कार्यक्रम था। हमारा कार्यक्रम तीन से पांच बजे तक था। शाम का समय जब हमारा फ्री था तो एक परिवार वाले आकर हमें कहने लगे कि बहन जी, शाम के समय अगर फ्री हो तो हमारी कॉलोनी में बहुत अच्छे लोग रहते हैं, अगर आप एक घंटे का प्रवचन दो, तो सबको लाभ मिल जायेगा। सारे लोग बहुत ही आध्यात्मिक विचार वाले हैं। हमने हाँ कहा, तो उन्होंने बोला कि शाम को सात से आठ बजे का टाइम दे देते हैं सबको। फिर वो तो चले गए। हम भी यहाँ कार्यक्रम में गए तीन से पाँच बजे तक। पाँच बजे कार्यक्रम पूरा होने के बाद कुछ प्रश्न-उत्तर हुआ। कुछ लोगों से मिलना हुआ। - क्रमश:

ख्यालों के आईने में...

मनुष्य का सम्मान उन शब्दों में नहीं, जो उसकी उपस्थिति में कहे जाएं, बल्कि उन शब्दों में है, जो उसकी अनुपस्थिति में बोले जाएं।

चुनौतियां ही ज़िंदगी को रोमांचक बनाती हैं, और इसी से आपकी ज़िन्दगी का महत्व निर्माण होता है! बुराई का कद कितना भी ऊँचा हो, सत्य से छोटा ही होता है।